International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 5.454 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 6, November 2019 |

जापानी हाइकु एवं आधुनिक हिन्दी काव्य

गीतांजली कोलीवाल

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, लूणकरणसर

सार

हाइकु एक प्रकार की संक्षिप्त कविता जिसकी उत्पत्तिजापान। पारंपरिक जापानी हाइकु में 5, 7, 5 पैटर्न में 17 ध्वन्यात्मक इकाइयों (जापानी में कहा जाता है, जो अक्षरों के समान हैं) से बने तीन वाक्यांश शामिलहैं; [1]जिसमेंकिरेजी, या "कटिंग वर्ड" शामिल है; [2]और एककिगो, या मौसमी संदर्भ। ऐसी ही कविताएँ जो इन नियमों का पालन नहीं करतीं, उन्हें आम तौर परसेनरीयू। [3]हाइकु की उत्पत्ति रेंगा नामक एक बड़ी जापानी कविता के शुरुआती भाग के रूप में हुई । प्रारंभिक छंद के रूप में लिखे गए इन हाइकु को होक्कू के नाम से जाना जाता था और समय के साथ इन्हें एकल कविताओं के रूप में लिखा जाने लगा। हाइकु को इसका वर्तमान नाम 19वीं शताब्दी के अंत में जापानी लेखक मसाओका शिकी द्वारा दिया गया था। [4]मूल रूप से जापान के हाइकु आज दुनिया भर के लेखकों द्वारा लिखे जाते हैं। अंग्रेजी में हाइकु और अन्य भाषाओं में हाइकु की अलग-अलग शैलियाँ और परंपराएँ हैं, जिनमें अभी भी पारंपरिक हाइकु रूप के पहलू शामिल हैं। गैर-जापानी हाइकु इस बात पर व्यापक रूप से भिन्न हैं कि वे पारंपरिक तत्वों का कितनी बारीकी से पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त, आधुनिक जापानी हाइकु के भीतर एक अल्पसंख्यक आंदोलन , जो ओगिवारा सीसेंसुई और उनके शिष्यों द्वारा समर्थित है , प्रकृति को अपने विषय के रूप में लेने के साथ-साथ 17 की परंपरा से भिन्न है ।

हिंदी काव्य का आधुनिक काल 1850 से आरम्भ होता है। इसी युग मे हिंदी पद्य के साथ साथ गद्य का भी विकास हुआ। जन संचार के विभिन्न साधनों जैसे रेडिओ व समाचार पत्र का विकास इसी समय हुआ था। जिसका प्रभाव आधुनिक हिंदी काव्य पर भी पड़ा।आधुनिक काल का हिंदी पद्य साहित्य पिछली सदी में विकास के अनेक पड़ावों से गुज़रा। जिसमें अनेक विचार धाराओं का बहुत तेज़ी से विकास हुआ। जहाँ काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नई कविता युग और साठोत्तरी कविता इन नामों से जाना गया, छायावाद से पहले के पद्य को भारतेंदु हरिश्चंद्र युग और महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के दो और युगों में बाँटा गया।

डॉ॰ सत्यभूषण वर्मा (जन्म: 4 दिसम्बर 1932 रावलपिंडी मृत्यु:13 जनवरी 2005 दिल्ली), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में जापानी भाषा के पहले प्रोफेसर थे। हिन्दी हाइकु का भारत में प्रचार-प्रसार करने में उनकी बड़ी भूमिका रही है।

परिचय

जापानी हाइकु में, एक किरेजी , या काटने वाला शब्द, आम तौर पर कविता के तीन वाक्यांशों में से एक के अंत में दिखाई देता है। किरेजी शास्त्रीय पश्चिमी कविता में कैसुरा या सॉनेट्स में वोल्टा के समान भूमिका निभाता है । [5] [एक किरेजी लयबद्ध विभाजनों को चिह्नित करने में मदद करता है। [6] यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सा काटने वाला शब्द चुना गया है और पद्य के भीतर उसकी स्थिति क्या है, यह विचार की धारा को संक्षिप्त रूप से काट सकता है, पूर्ववर्ती और निम्नलिखित वाक्यांशों के बीच एक समानता का सुझाव दे सकता है, या यह एक गरिमापूर्ण अंत प्रदान कर सकता है, पद्य को एक ऊंचे स्वर के साथ समाप्त कर सकता है बंद होने का भाव[7,8]

किरेजी पद्य को संरचनात्मक समर्थन देता है, [[8] जिससे यह एक स्वतंत्र कविता के रूप में खड़ा हो जाता है। [9] [10] किरेजी का उपयोग हाइकु और होक्कू को रेनकु के दूसरे और बाद के छंदों से अलग करता है ; जो शब्दार्थ और वाक्यविन्यास विच्छेदन को नियोजित कर सकता है, यहाँ तक कि कभी-कभी किसी वाक्यांश को वाक्य-समाप्ति कण (終助詞, शोजोशी) के साथ समाप्त करने की स्थिति तक भी । हालाँकि, रेनकु आमतौर पर किरेजी को नियोजित करते हैं । [11]

अंग्रेजी में, चूंकि किरेजी का कोई प्रत्यक्ष समकक्ष नहीं है, इसलिए कवि कभी-कभी विराम चिह्नों जैसे डैश या इलिप्सिस, या एक निहित विराम का उपयोग एक जुड़ाव बनाने के लिए करते हैं, जिसका उद्देश्य पाठक को दो भागों के बीच संबंधों पर विचार करने के लिए प्रेरित करना है।

बाशो उदाहरणों में किरेजी "पुराना तालाब" और "माउंट फ़ूजी की हवा" दोनों "या" (や) हैं। न तो शेष बाशो उदाहरण और न ही इस्सा उदाहरण में किरेजी शामिल है । हालाँकि, वे दोनों पहले पाँच में एक टुकड़े को शेष 12 में एक वाक्यांश के विरुद्ध संतुलित करते हैं (यह इस्सा के अंग्रेजी अनुवाद से स्पष्ट नहीं हो सकता है कि पहले पाँच का अर्थ "ईदो की बारिश" है)।[10,

चालू

आमतौर पर सिलेबिक मीटर की विशेषता वाली अंग्रेजी कविता की तुलना में , जापानी कविता ध्वनि इकाइयों की गणना करती है जिन्हें ऑन या मोरे के नाम से जाना जाता है । पारंपरिक हाइकु आम तौर पर निश्चित छंद है जिसमें क्रमशः पांच, सात और पांच के

तीन वाक्यांशों में 17 पर , शामिल होते हैं । आधुनिक कविताओं में, तेइकेई (定型 निश्चित रूप) हाइकु 5-7-5 पैटर्न का उपयोग जारी रखता है जबकि जियुरित्सु (自由律 मुक्त रूप) हाइकु नहीं करता है, [4,5,6] हालांकि, नीचे दिए गए उदाहरणों में से एक यह दर्शाता है कि पारंपरिक हाइकु मास्टर्स हमेशा 5-7-5 पैटर्न से बंधे नहीं थे। जियुरित्सु की वकालत ओगिवारा सीसेंसुई और उनके शिष्यों ने की थी ।

हालाँकि कभी-कभी शब्द का अनुवाद "शब्दांश" के रूप में किया जाता है, लेकिन इसका सही अर्थ अधिक सूक्ष्म होता है। जापानी में एक को छोटे शब्दांश के लिए, दो को लम्बे स्वर या दोहरे व्यंजन के लिए , और एक को शब्दांश के अंत में "एन" के लिए गिना जाता है। इस प्रकार, शब्द "हैबुन", हालांकि अंग्रेजी में दो अक्षरों के रूप में गिना जाता है, जापानी में चार (हा-ए-बु-एन) में गिना जाता है; और शब्द " ऑन " स्वयं, जिसे अंग्रेजी बोलने वाले एक ही शब्दांश के रूप में देखेंगे, इसमें दो शामिल हैं : लघु स्वर ओ और मोरैक नेज़ल एन । इसे नीचे इस्सा हाइकु द्वारा दर्शाया गया है , जिसमें 17 लेकिन केवल 15 अक्षर हैं। इसके विपरीत, कुछ ध्वनियाँ , जैसे "क्यो" (きょ) अंग्रेजी बोलने वालों को दो अक्षरों की तरह लग सकती हैं लेकिन वास्तव में जापानी में एक ही (साथ ही एक ही अक्षर) होती हैं।

1973 में, हाइकु सोसाइटी ऑफ अमेरिका ने नोट किया कि अंग्रेजी में हाइकु के लेखकों के लिए मानक 17 अक्षरों का उपयोग करना था, लेकिन उन्होंने छोटे हाइकु की ओर रुझान भी देखा। [12] 21वीं सदी के अंग्रेजी हाइकु लेखन में छोटे हाइकु बहुत आम हैं। अंग्रेजी में लगभग 12 अक्षर 17 जापानी की अवधि के बराबर हैं । [12] [

किगो

हाइकु में परंपरागत रूप से एक किगो , एक शब्द या वाक्यांश होता है जो कविता के मौसम का प्रतीक या संकेत देता है और जो सैजिकी से लिया गया है , जो ऐसे शब्दों की एक व्यापक लेकिन अनुदेशात्मक सूची है। किगो अक्सर उपनामों के रूप में होते हैं।और उन लोगों के लिए मुश्किल हो सकता है जिनके पास जापानी सांस्कृतिक संदर्भों की कमी है।।नीचे दिए गए बाशो उदाहरणों में "कावाज़ू", "मेंढक" जिसका अर्थ वसंत है, और "शिगुरे", देर से शरद ऋतु या शुरुआती सर्दियों में बारिश की बौछार शामिल है। किगो को हमेशा गैर-जापानी हाइकु में या जापानी फ्री-फॉर्म हाइकु के आधुनिक लेखकों द्वारा शामिल नहीं किया जाता है।

आधुनिक हिन्दी काव्य

भारतेंदु हरिश्चंद्र युग की कविता (1850-1900) :

इस काल के प्रमुख कवि - भार्तेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाचरण गोस्वामी औउर अम्बिका दत्त व्यास है।

पं महावीर प्रसाद द्विवेदी युग की कविता (1900-1920) :

इस काल के प्रमुख कवि - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामचरित उपध्याय, जगन्नाथ दास रत्नाकर, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', श्रीधर पाठक, राम नरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, लोचन प्रसाद पाण्डेय और सियारामशरण गुप्त है।

छायावादी युग की कविता (1920-1936) :

इस काल के प्रमुख कवि - जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा है।

उत्तर-छायावाद युग-(1936-1943) :

इस काल के प्रमुख कवि - माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवंश राय 'बच्चन', भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन और रांगेयराघव है।

डॉ॰ सत्यभूषण वर्मा ने जापानी से सीधे हिन्दी में हाइकु कविताओं के अनुवाद किए। इससे पहले जो अनुवाद हाइकु कविताओं के किए गए वे सभी जापानी से अंग्रेजी उसके बाद अंग्रेजी से हिन्दी में किये जाते थे। १९७८ में उन्होंने भारतीय हाइकु क्लब की स्थापना की तथा फरवरी ७८ से अगस्त ८६ तक प्रकाशित 'हाइकु' के २६ अंकों ने हिन्दी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं में भी हाइकु सृजन को आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करने की आधार पीठिका तैयार की। जापान और वहाँ की संस्कृति उनके रोम-रोम में बसी थी और वर्ष में चार छ: जापान यात्राएँ उनकी नियमितचर्या का हिस्सा थीं। जापान से भारत आने वाले तथा भारत से जापान जाने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण प्रतिनिधि मण्डलों में प्रो॰ वर्मा की हिस्सेदारी किसी न किसी रूप में अवश्य होती थी। वे सही अर्थों में भारत और जापान

के बीच सांस्कृतिक सेतु की तरह थे और उनकी इसी छवि का संज्ञान लेते हुए वर्ष १९९६ में जापान सम्राट की ओर से नई दिल्ली में उन्हें 'दि आर्डर ऑफ राइजिंग सन: गोल्ड रेज विद रोसेट' नामक महत्वपूर्ण सम्मान से सम्मानित किया गया था।[2] [3]
भारत में हाइकु कविता के प्रचार-प्रसार में उनकी महत्वपूर्ण और अत्यन्त उपयोगी भूमिका तथा दीर्घकालिक योगदान के लिए उन्हें दिसम्बर २००२ में जापान में हाइकु कविता के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान मासाओका शिकी अंतर्राष्ट्रीय हाइकु पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया था। जापानी के साथ-साथ चीनी, उडिया, बाँगला, अंग्रेजी, हिन्दी आदि कई भाषाओं के विद्वान प्रो॰ वर्मा ने स्वयं हाइकु सृजन नहीं किया, लेकिन सीधे जापानी से भारतीय भाषाओं में हाइकु के अनुवाद का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करते हुए उन्होंने इस विधा से भारतीय रचनाकारों का साक्षात्कार कराया। उससे पूर्व हाइकु अंग्रेजी अनुवादों के माध्यम से ही लोगों तक पहुँचा था और उसकी कोई स्पष्ट छवि, शिल्प या दर्शन सुनिश्चित नहीं था। उनकी पुस्तक 'जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता' ने उनके हाइकु मिशन को पूरा करने में अत्यन्त महत्वूर्ण योगदान किया। उससे पूर्व उनकी अनूदित पुस्तक 'जापानी कविताएँ' वर्ष १९७७ में ही प्रकाशित हो चुकी थी। जापान में प्रकाशित पहले जापानी हिन्दी शब्दकोश की रचना करके उन्होंने दोनों भाषाओं के बीच एक सुदृढ़सेतु के निर्माण का भी उल्लेखनीय कार्य किया। अनुवाद के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों को अत्यन्त सम्मान से याद किया जाता है। प्रो॰ वर्मा भारत में हाइकु सम्बन्धी हर गतिविधि के केन्द्र १३ जनवरी २००५ को अपनी मृत्यु के ठीक पूर्व तक बने रहे। १९८८ में उनके द्वारा निर्मित हाइकु केन्द्रित लघु वृत्त चित्र 'स्माल इज़ द ब्यूटीफुल' विधा के लिए उनका एक अन्यतम योगदान रहा, जिसे जापान में पुरस्कृत भी किया गया था। उनकी प्रतिबद्धता और उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि मेरठ तथा लखनऊ विश्वविद्यालयों में हाइकु केन्द्रित शोध हुए तथा अन्य कई विश्वविद्यालयों ने हाइकु को शोध के लिए चुना। 1991-92 में कोयातो जापान स्थित इण्टरनेशनल रिसर्च सेण्टर फॉर जापानीज़ स्टडीज़ के विजिटिंग प्रोफेसर रहे।

विचार-विमर्श

यह सर्वमान्य तथ्य है कि हिन्दी साहित्य और भारतीय कला जगत रचनात्मकता के लिए सीमा के किसी बंधन को नहीं मानता । भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही प्रवासियों द्वारा कला के विभिन्न स्वरूपों को आत्मसात किया गया है। एक शताब्दी पूर्व सन् 1900 ई0 के लगभग जापानी साहित्यकार मासाओका शिकि (1867-1902) ने विशिष्ट जापानी छंद “होक्कु” को एक नया नाम हाइकु (Haiku) दिया जिसने लोकप्रियता के बड़े मानकों को प्राप्त किया। आज जापान में लाखों लोग इस छन्द में रचना करते हैं । भारत की अनेक भाषाओं के साथ -साथ हाइकु विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में लिखा और पढ़ा जा रहा है । भारतीय साहित्य की उर्वरा भूमि को यह कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जापानी तोहफा है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि हिन्दी साहित्य और भारतीय कला जगत रचनात्मकता के लिए सीमा के किसी बंधन को नहीं मानता । भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही प्रवासियों द्वारा कला के विभिन्न स्वरूपों को आत्मसात् किया गया है।[1,2,3]

- हिन्दी साहित्य की अनेकानेक विधाओं में से एक नवीनतम विधा है हाइकु । हालाँकि यह विधा लगभग एक शताब्दी पूर्व सन् 1919 में कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा अपनी जापान यात्रा से लौटने के पश्चात उनके ‘जापान यात्री’ में प्रसिद्ध जापानी हाइकु कवि मात्सुओ बाशो की हाइकु कविताओं के बांग्ला भाषा में अनुवाद के रूप में सर्वप्रथम हिन्दुस्तानी धरती पर अवतरित हुई; परन्तु इतने पहले आने के बावजूद लम्बे समय तक यह साहित्यिक विधा हिन्दुस्तानी साहित्यिक जगत् में अपनी कोई विशेष पहचान नहीं बना सकी। इस प्रकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा जापानी हाइकु कविताओं के बंगला भाषा में अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य उर्वरा भूमि में हाइकु का बीजारोपण तो हो गया ;परन्तु इस बीज के अंकुरित होकर विकसित होने के लिए जिस अनुकूल वातावरण की आवश्यकता थी ,वह श्रद्धेय अज्ञेय के माध्यम से मिला।
- हिन्दी भाषा में हाइकु की प्रथम चर्चा का श्रेय अज्ञेय को दिया जाता है, उन्होंने छठे दशक (1960) में अरी ओ करुणा प्रभामय (1959) में अनेक हाइकुनुमा छोटी कविताएँ लिखी हैं ;जो हाइकु के बहुत निकट हैं। जिन पर अब भी लगातार शोध जारी है।
- प्रो॰ डा॰ सत्यभूषण वर्मा ने हिन्दी साहित्य संसार को सबसे पहले हाइकु से परिचित कराया तथा अन्तर्देशीय पत्र प्रकाशित कर हाइकु को चर्चित किया।
- वर्तमान में संसार भर में फैले हिंदुस्तानियों की इन्टरनेट पर फैली रचनाओं के माध्यम से यह विधा हिन्दुस्तानी कविता -जगत में ही नही वरन् विभिन्न देशों में हिन्दी काव्य -जगत् में प्रमुखता से अपना स्थान बना रही है।

इस विधा का काव्य अनुशासन

कुछ लोग इस विधा की तुलना हिन्दी काव्य विधा त्रिवेणी से करते हैं। हाइकु और त्रिवेणी में केवल इतनी समानता है कि दोनों में केवल तीन पंक्तियाँ होती है । तीन पंक्तियों के साम्य के अतिरिक्त इन दोनो विधाओं में अन्य कोई साम्य नहीं है। इस जापानी विधा को हिन्दी काब्य जगत के अनुशासन से परिचित कराते हुए डॉ0 जगदीश व्योम ने बताया है:-

- हाइकु सत्रह (17) वर्णों में लिखी जाने वाली सबसे छोटी कविता है। इसमें तीन पंक्तियाँ रहती हैं। प्रथम पंक्ति में 5 वर्ण दूसरी में 7 और तीसरी में 5 वर्ण रहते हैं।

- संयुक्त वर्ण भी एक ही वर्ण गिना जाता है, जैसे (सुगन्ध) शब्द में तीन वर्ण हैं-(सु-1, ग-1, न्ध-1)। तीनों वाक्य अलग-अलग होने चाहिए। अर्थात् एक ही वाक्य को 5,7,5 के क्रम में तोड़कर नहीं लिखना है। बल्कि तीन पूर्ण पंक्तियाँ हों।
- अनेक हाइकुकार एक ही वाक्य को 5-7-5 वर्ण क्रम में तोड़कर कुछ भी लिख देते हैं और उसे हाइकु कहने लगते हैं। यह सरासर गलत है, और हाइकु के नाम पर स्वयं को छलावे में रखना मात्र है।
- हाइकु कविता में 5-7-5 का अनुशासन तो रखना ही है, क्योंकि यह नियम शिथिल कर देने से छन्द की दृष्टि से अराजकता की स्थिति आ जाएगी।
- इस संबंध में डा० ब्योम जी का मानना है कि हिन्दी अपनी बात कहने के लिये अनेक प्रकार के छंदों का प्रचलन है; अतः उपर्युक्त अनुशासन से भिन्न प्रकार से लिखी गई पंक्तियों को हाइकु न कहकर मुक्त छंद अथवा क्षणिका ही कहना चाहिए।
- वास्तव में हाइकु का मूल स्वरूप कम शब्दों में 'घाव करें गम्भीर ' की कहावत को चरितार्थ करना ही है। अतः शब्दों के अनुशासन से इतर लिखी गयी रचना को हाइकु कहकर सम्बोधित करना उसके मूल स्वरूप के साथ छेड़छाड ही कहा जाएगा।

प्रकृति के भावप्रवण चित्रण हेतु हाइकु एक सशक्त विधा है ।

ताँका

ताँका जापानी काव्य की कई सौ साल पुरानी काव्य शैली है । इस जापानी विधा के अनुशासन से परिचित कराते हुए रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने बताया है:-

- इस शैली को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के दौरान काफी प्रसिद्धि मिली। उस समय इसके विषय धार्मिक या दरबारी हुआ करते थे । हाइकु का उद्भव इसी से हुआ । इसकी संरचना 5+7+5+7+7=31वर्णों की होती है।
- एक कवि प्रथम 5+7+5=17 भाग की रचना करता था तो दूसरा कवि दूसरे भाग 7+7 की पूर्त्ति के साथ श्रृंखला को पूरी करता था । फिर पूर्ववर्ती 7+7 को आधार बनाकर अगली श्रृंखला में 5+7+5 यह क्रम चलता;फिर इसके आधार पर अगली श्रृंखला 7+7 की रचना होती थी ।
- इस काव्य श्रृंखला को रेंगा कहा जाता था । इस प्रकार की श्रृंखला सूत्रबद्धता के कारण यह संख्या 100 तक भी पहुँच जाती थी ।
- ताँका पाँच पंक्तियों और 5+7+5+7+7= 31 वर्णों के लघु कलेवर में भावों को गुम्फित करना सतत अभ्यास और सजग शब्द साधना से ही सम्भव है ।
- इसमें यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि इसकी पहली तीन पंक्तियाँ कोई स्वतन्त्र हाइकु है । इसका अर्थ पहली से पाँचवीं पंक्ति तक व्याप्त होता है ।
- ताँका -शब्द का अर्थ है लघुगीत । लयविहीन काव्यगुण से शून्य रचना छन्द का शरीर धारण करने मात्र से ताँका नहीं बन सकती ।
- साहित्य का दायित्व बहुत व्यापक है ;अत: ताँका को किसी विषय विशेष तक सीमित नहीं किया जा सकता।
- सुधा गुप्ता का सात छेद वाली मैं और रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का झरे हरसिंगार चर्चित ताँका -संग्रह हैं

चोका

चोका (लम्बी कविता) पहली से तेरहवीं शताब्दी में जापानी काव्य विधा में महाकाव्य की कथाकथन शैली रही है । इस जापानी विधा को हिन्दी काब्य जगत के अनुशासन से परिचित कराते हुए रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने बताया है:-

- मूलत; चोका गाए जाते रहे हैं । चोका का वाचन उच्च स्वर में किया जाता रहा है ।यह प्राय: वर्णनात्मक रहा है । इसको एक ही कवि रचता है।
- इसका नियम इस प्रकार है -

5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7 और अन्त में +[एक ताँका जोड़ दीजिए।] या यों समझ लीजिए कि समापन करते समय इस क्रम के अन्त में 7 वर्ण की एक और पंक्ति जोड़ दीजिए । इस अन्त में जोड़े जाने वाले ताँका से पहले कविता की लम्बाई की सीमा नहीं है । इस कविता में मन के पूरे भाव आ सकते हैं ।

- इनका कुल पंक्तियों का योग सदा विषम संख्या [ODD] यानी 25-27-29-31……इत्यादि ही होता है ।
- डॉ0 डॉ सुधा गुप्ता जी ने स्वतन्त्र रूप से 'ओक भर किरनें ' भावना कुँअर ने परिन्दे कब लौटे, चोका रचनाओं के द्वारा इस शैली के रचनाकर्म की ओर अनेक कवियों को प्रोत्साहित किया । मिले किनारे' रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' और हरदीप कौर सन्धु का चोका एवं ताँका का युगल संकलन है । उजास साथ रखना एक मात्र सम्पादित चोका -संग्रह है; जिसका सम्पादन रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' , भावना कुँअर और हरदीप कौर सन्धु ने किया है ।

हाइकु का चित्रात्मक निरूपण है हाइगा

हाइगा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है हाइ और गा । हाइ शब्द का अर्थ है हाइकु जो जापनी कविता की एक समर्थवान विधा है और गा का तात्पर्य है चित्र । इस प्रकार हाइगा का अर्थ है चित्रों के समायोजन से वर्णित किया गया हाइकु।

- वास्तव में हाइगा जापानी पेण्टिंग की एक शैली है,जिसका शाब्दिक अर्थ है-'चित्र-कविता' ।
- हाइगा दो शब्दों के जोड़ से बना है ...("हाइ" = कविता या हाइकु + "गा" = रंगचित्र चित्रकला)
- हाइगा की शुरुआत 17 वीं शताब्दी में जापान में हुई | उस जमाने में हाइगा रंग - ब्रुश से बनाया जाता था |
- फ़िलहाल कविता कोश में रचनाओं को जोडे जाने के संबंध में अपनाये जा रहे मानकों के अनुरूप इस कोश में चित्रात्मक रचनाओं (जैसे कि हाइगा या चित्र पर लिखे शे'र और ग़ज़ल) इत्यादि का संकलन नहीं किया जा रहा है। ऋता शेखर 'मधु' ने 2013 में प्रथम हाइगा-संग्रह सम्पादित किया।[3,4]

जापानी काव्य-विधा, हाइकु, हिन्दी कवियों को खूब भा गयी है. आज ढेरों कवि हिन्दी में हाइकु लिख रहे हैं. हाइकु-लेखन ने लगभग एक आन्दोलन का रूप ले लिया है. एक और महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि अब हाइकु रचनाकार स्वयं को केवल हाइकु लेखन तक ही सीमित नहीं रखे हैं बल्कि हाइकु परिवार की अन्य विधाओं को भी, जैसे, वाका/तांका, सेदोका, चोका, सेंरयु आदि को भी अपना रहे हैं.

हिन्दी में इस हाइकु आन्दोलन के प्रेरक डा. सत्य भूषण वर्मा थे. अज्ञेय ने सबसे पहले हिंदी जगत को हाइकु विधा से परिचित कराया था. कुछ हाइकु लिखे भी थे किन्तु हाइकु लेखन को वह आन्दोलन नहीं बना सके. डा. वर्मा ने सबसे पहले मूल जापानी से कुछ हाइकु रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया. इससे हिन्दी जगत को मूल जापानी रचनाओं की एक अच्छी जानकारी मिली. साथ ही उन्होंने अंतरदेशीय पत्र में हाइकु की एक पत्रिका निकालना आरम्भ की जिससे हिंदी हाइकुकारों को एक मंच मिला. आज जिन हिन्दी रचनाकारों ने हाइकु लेखन में अपनी पहचान बनाई है उनमें से अधिकतर इस पत्रिका से जुड़े रहे हैं. डा. वर्मा ने स्वयं तो हाइकु रचनाएं नहीं कीं किन्तु ' जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता ' पर शोध कार्य कर एक अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हिन्दी साहित्य को प्रदान किया. उस समय हाइकु लेखन को जो उन्होंने प्रोत्साहन दिया वह उल्लेखनीय है. इस प्रोत्साहन को और भी आगे बढाने में डा. भगवतशरण अग्रवाल का नाम और भी उल्लेखनीय है. सौभाग्य से प्रोत्साहन के इस कार्य में वे आज भी जुटे हुए है. उन्होंने अपनी "हाइकु भारती" पत्रिका के माध्यम से न जाने कितने रचनाकारों को हाइकुकार बना दिया. उन्होंने स्वयं भी खूब हाइकु रचे और वह अनेक रचनाकारों को सामने लाए. उनके प्रयत्नों से हिन्दी में हाइकु लेखन ने सचमुच एक आन्दोलन का ही रूप ले लिया. हिंदी में प्रथम हाइकु संग्रह, 'शाश्वत क्षितिज' डा. अग्रवाल का ही आया. उन्होंने एक 'हाइकु विश्व-कोश' भी तैयार किया जो संभवत: विश्व में हाइकु काव्य पर प्रथम विश्व-कोश है.

हाइकु को समर्पित हिन्दी में अनेक पत्रिकाए निकलने लगीं. डा. जगदीश व्योम ने 'हाइकु दर्पण' निकाला. यह अभी तक निकल रहा है. डा. महावीर सिंह ने रायबरेली से 'त्रिशूल' निकाला यह भी अभी तक निकल रहा है. इसके अलावा कुछ अल्पजीवी हाइकु पत्रिकाएँ भी निकली और ढेर सारे हाइकु-विशेषांक अन्यान्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे. 'अभिनव इमरोज़' ने लभभग दो सौ-पौने दो सौ पृष्ठों का एक हाइकु विशेषांक बड़ी सज- धज के साथ अक्टूबर, २०१३ में निकाला. इसकी अतिथि सम्पादक थीं, डा. मिथलेश दीक्षित. इसका फलक बहुत व्यापक था. इसमें २०० से अधिक रचनाकारों के लगभग १५०० हाइकु सम्मिलित किए गए. हाइकु पर अनेक आलेख प्रकाशित हुए. विभिन्न विधाओं में हाइकु रचनाओं को स्थान दिया गया – हाइकु नवगीत, हाइकु मुक्तक, हाइकु रुबाई, हाइकु दोहे, हाइकु ग़ज़ल आदि छापी गईं. हाइकु आधारित ये विधाएं हिन्दी रचनाकारों की सूझ हैं.

हिन्दी हाइकु के लिए एक बड़ा कान कमलेश भट्ट कमल ने भी किया. उन्होंने प्रतिनिध हाइकु कविताओं के संकलन निकाले. पहला संकलन – 'हाइकु-१९८९' –निकला. बाद में 'हाइकु-१९९९' तथा 'हाइकु-२००९' भी निकाले गए. इन संकलनों से रचनाकारों की पहचान बनी.

हाइकु लेखन में हिन्दी में खूब प्रयोग हुए. लेकिन हिन्दी रचनाकार इनसे संतुष्ट नहीं हुआ. उसने जापान में प्रचलित 'हाइकु परिवार' की अन्य विधाओं की भी जानकारी ली. इन सभी विधाओं को हम 'हाइकु परिवार' का इसलिए कह सकते हैं क्योंकि इनका शिल्प 'हाइकु' से मिलता जुलता है. ये सभी लघुकाय हैं और सभी अक्षर अनुशासन का पालन करती है. इनमें एक है "ताँका". तांका का परिचय हिन्दी जगत को सबसे पहले डा. अंजलि देवधर ने कराया. उन्होंने जापान के दस वाका, या कहें, ताँका –एक ही बात है- कवियों की १०० रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया. वाका का अर्थ ही जापानी कविता या गीत है. 'वा' अर्थात जापानी और 'का' अर्थात गीत. यह पांच पंक्तियों की तेरह अक्षरों वाली कविता है. इसे ५-७-५-७-७ अक्षरों में आयोजित किया जाता है. बाद में वाका कविता की ही प्रथम तीन पंक्तियों के आकार को स्वीकार कर, हाइकु कविताओं का रूप विन्यास ५-७*५ प्रतिष्ठित हुआ. तेरहवीं शताब्दी से पहले की जापानी

वाका कवितायेँ मुख्यत: राज दरबार की कवितायेँ हैं. ये सहज न होकर बहुत कुछ कृत्रिमता ओढ़े हुए है.[4,5] किन्तु इनमें वे कवितायेँ जो वैयक्तिक भावनाओं को सरलता से प्रकट करती हैं बहुत अच्छी बन पडी हैं – * * समुद्र तट /दहाड़ती लहरें /घिरती रात / अनुपस्थित है तू /फिर भी मेरे पास * हर चौखट /भटकता कहा मैं /तुम्हारे लिए/ नगर में, वन में /आग में, बरफ में * इतना वृद्ध /कि छोड़ गए मित्र /सारे के सारे /बरगद पुराना /नहीं देता सांत्वना * वासंती दिन /हर जगह शान्ति /चेरी के फूल/ क्यों अशांत होकर /यत्र तत्र बिखरे! * वादा करके /वह मुकर गया /मेरी तो छोडो / शपथ बद्ध वह /कैसा दयनीय है! * एक अकेला /पर्वत की ढाल पे /चेरी का वृक्ष /अनजान सा खडा / सहचर के बिना

परिणाम

जापानी काव्य-विधा, हाइकु, हिन्दी कवियों को खूब भा गयी है. आज ढेरों कवि हिन्दी में हाइकु लिख रहे हैं. हाइकु-लेखन ने लगभग एक आन्दोलन का रूप ले लिया है. एक और महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि अब हाइकु रचनाकार स्वयं को केवल हाइकु लेखन तक ही सीमित नहीं रखे हैं बल्कि हाइकु परिवार की अन्य विधाओं को भी, जैसे, वाका/तांका, सेदोका, चोका, सेंरयु आदि को भी अपना रहे हैं.

हिन्दी में इस हाइकु आन्दोलन के प्रेरक डा. सत्य भूषण वर्मा थे. अज्ञेय ने सबसे पहले हिंदी जगत को हाइकु विधा से परिचित कराया था. कुछ हाइकु लिखे भी थे किन्तु हाइकु लेखन को वह आन्दोलन नहीं बना सके. डा. वर्मा ने सबसे पहले मूल जापानी से कुछ हाइकु रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया. इससे हिन्दी जगत को मूल जापानी रचनाओं की एक अच्छी जानकारी मिली. साथ ही उन्होंने अंतरदेशीय पत्र में हाइकु की एक पत्रिका निकालना आरम्भ की जिससे हिंदी हाइकुकारों को एक मंच मिला. आज जिन हिन्दी रचनाकारों ने हाइकु लेखन में अपनी पहचान बनाई है उनमें से अधिकतर इस पत्रिका से जुड़े रहे हैं. डा. वर्मा ने स्वयं तो हाइकु रचनाएं नहीं कीं किन्तु ' जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता ' पर शोध कार्य कर एक अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हिन्दी साहित्य को प्रदान किया. उस समय हाइकु लेखन को जो उन्होंने प्रोत्साहन दिया वह उल्लेखनीय है. इस प्रोत्साहन को और भी आगे बढाने में डा. भगवतशरण अग्रवाल का नाम और भी उल्लेखनीय है. सौभाग्य से प्रोत्साहन के इस कार्य में वे आज भी जुटे हुए है. उन्होंने अपनी "हाइकु भारती" पत्रिका के माध्यम से न जाने कितने रचनाकारों को हाइकुकार बना दिया. उन्होंने स्वयं भी खूब हाइकु रचे और वह अनेक रचनाकारों को सामने लाए. उनके प्रयत्नों से हिन्दी में हाइकु लेखन ने सचमुच एक आन्दोलन का ही रूप ले लिया. हिंदी में प्रथम हाइकु संग्रह, 'शाश्वत क्षितिज' डा. अग्रवाल का ही आया. उन्होंने एक 'हाइकु विश्व-कोश' भी तैयार किया जो संभवत: विश्व में हाइकु काव्य पर प्रथम विश्व-कोश है.

हाइकु को समर्पित हिन्दी में अनेक पत्रिकाए निकलने लगीं. डा. जगदीश व्योम ने 'हाइकु दर्पण' निकाला. यह अभी तक निकल रहा है. डा. महावीर सिंह ने रायबरेली से 'त्रिशूल' निकाला यह भी अभी तक निकल रहा है. इसके अलावा कुछ अल्पजीवी हाइकु पत्रिकाएँ भी निकली और ढेर सारे हाइकु-विशेषांक अन्यान्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे. 'अभिनव इमरोज़' ने लभभग दो सौ-पौने दो सौ पृष्ठों का एक हाइकु विशेषांक बड़ी सज- धज के साथ अक्टूबर, २०१३ में निकाला. इसकी अतिथि सम्पादक थीं, डा. मिथलेश दीक्षित. इसका फलक बहुत व्यापक था. इसमें २०० से अधिक रचनाकारों के लगभग १५०० हाइकु सम्मिलित किए गए. हाइकु पर अनेक आलेख प्रकाशित हुए. विभिन्न विधाओं में हाइकु रचनाओं को स्थान दिया गया – हाइकु नवगीत, हाइकु मुक्तक, हाइकु रुबाई, हाइकु दोहे, हाइकु ग़ज़ल आदि छापी गईं. हाइकु आधारित ये विधाएं हिन्दी रचनाकारों की सूझ हैं.[6,7]

हिन्दी हाइकु के लिए एक बड़ा कान कमलेश भट्ट कमल ने भी किया. उन्होंने प्रतिनिध हाइकु कविताओं के संकलन निकाले. पहला संकलन – 'हाइकु-१९८९' –निकला. बाद में 'हाइकु-१९९९' तथा 'हाइकु-२००९' भी निकाले गए. इन संकलनों से रचनाकारों की पहचान बनी.

हाइकु लेखन में हिन्दी में खूब प्रयोग हुए. लेकिन हिन्दी रचनाकार इनसे संतुष्ट नहीं हुआ. उसने जापान में प्रचलित 'हाइकु परिवार' की अन्य विधाओं की भी जानकारी ली. इन सभी विधाओं को हम 'हाइकु परिवार' का इसलिए कह सकते हैं क्योंकि इनका शिल्प 'हाइकु' से मिलता जुलता है. ये सभी लघुकाय हैं और सभी अक्षर अनुशासन का पालन करती है. इनमें एक है "ताँका". तांका का परिचय हिन्दी जगत को सबसे पहले डा. अंजलि देवधर ने कराया. उन्होंने जापान के दस वाका, या कहें, ताँका –एक ही बात है- कवियों की १०० रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया. वाका का अर्थ ही जापानी कविता या गीत है. 'वा' अर्थात जापानी और 'का' अर्थात गीत. यह पांच पंक्तियों की तेरह अक्षरों वाली कविता है. इसे ५-७-५-७-७ अक्षरों में आयोजित किया जाता है. बाद में वाका कविता की ही प्रथम तीन पंक्तियों के आकार को स्वीकार कर, हाइकु कविताओं का रूप विन्यास ५-७*५ प्रतिष्ठित हुआ. तेरहवीं शताब्दी से पहले की जापानी वाका कवितायेँ मुख्यत: राज दरबार की कवितायेँ हैं. ये सहज न होकर बहुत कुछ कृत्रिमता ओढ़े हुए है. किन्तु इनमें वे कवितायेँ जो वैयक्तिक भावनाओं को सरलता से प्रकट करती हैं बहुत अच्छी बन पडी हैं – * * समुद्र तट /दहाड़ती लहरें /घिरती रात / अनुपस्थित है तू /फिर भी मेरे पास * हर चौखट /भटकता कहा मैं /तुम्हारे लिए/ नगर में, वन में /आग में, बरफ में * इतना वृद्ध /कि छोड़ गए मित्र /सारे के सारे /बरगद पुराना /नहीं देता सांत्वना * वासंती दिन /हर जगह शान्ति /चेरी के फूल/ क्यों अशांत होकर /यत्र तत्र बिखरे! *

वादा करके /वह मुकर गया /मेरी तो छोडो / शपथ बद्ध वह /कैसा दयनीय है! * एक अकेला /पर्वत की ढाल पे /चेरी का वृक्ष /अनजान सा खडा / सहचर के बिना

फाकता थी शाम / भूरी-सलेटी पांखें / कुछ बोलती आँखें मुंडेर बैठी / कुछ देर टहली / खामोशी से उड़ ली

निष्कर्ष

हाइकु परिवार का एक और छंद 'चोका' है. हिन्दी में धीरे धीरे अब यह भी प्रवेश पा रहा है. इण्टरनेट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार चोका भी जापान का एक वर्णिक छंद है. ५-७-५-७ वर्ण क्रम में लिखे गए चोका में कई चरण होते हैं. अंतिम दो चरणों में ७-७ अक्षर होते है. चोका के चरणों की संख्या निश्चित नहीं है. यह कवि पर निर्भर करती है. मेरी जानकारी में चोका के एकल-संग्रह हिन्दी में कम ही आए हैं. एक संग्रह डा सुधा गुप्ता का है. एक और संग्रह मनोज सोनकर का है – चोका-चमन – जो मुझे पिछले माह ही (सितम्बर, २०१४) प्राप्त हुआ है. इसी वर्ष प्रकाशित भी हुआ है. डा. सोनकर का पहला हाइकु संग्रह, चितकबरी, १९९२ में प्रकाशित हुआ था. तब से वह बराबर हाइकु और हाइकु परिवार से जुड़े हुए हैं. हाइकु के अलावा उनके ताँका और सेदोका संग्रह तो आ ही चुके हैं, चोका-चमन उनका पहला चोका संग्रह है. मनोज सोनकर के काव्य में सामाजिक चेतना है. वे सामाजिक विकृतियों का बड़ा प्रभावशाली और व्यंग्यात्मक अंकन करते है. चोका छंद में उनका एक आकर्षक व्यक्ति चित्र देखिए -

आँखें तो बड़ी / रंग बहुत गोरा / विदेशी घड़ी / कुत्ते बहुत पाले पड़ोसी मोना / खुराक अच्छी डालें / आजादी प्यारी / शादी तो बंधन कहें कुंवारी / अंग्रेज़ी फ़िल्में लाएं / हिन्दी कचरा / खूब भुनभुनाएं / ब्रिटेन भाए / बातचीत उनकी / घसीट उसे लाए भले ही किताबें कम प्रकाशित हुई हों, इटरनेट पर हिन्दी में हाइकु परिवार का बोल-बाला है. डा. रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने 'त्रिवेणी' नाम से एक इंटरनेट पत्रिका ही कुछेक वर्षों से प्रकाशित करना आरम्भ कर दी है. इसमें वाका कवितायेँ, सेदोकू रचनाएं तथा चोका ही प्रकाशित किए जाते हैं. दर्जनों कवि इसमें शिरकत कर रहे हैं. 'हिमांशु' जी हाइकु परिवार की विधाओं पर रचनाकारों को लिखने के लिए प्रेरित भी खूब करते हैं. डा. सुधा गुप्ता, डा. रमाकांत श्रीवास्तव तथा डा. उर्मिला अग्रवाल ने तो उनके प्रोत्साहन को खुले दिल से स्वीकार भी किया है. इन प्रवृत्तियों को देखते हुए लगता है कि हिन्दी में हाइकु और हाइकु परिवार अपना वजूद कायम करने में पूरी तरह सफल हो गया है.[8]

संदर्भ

1. "जापानी हिन्दी शब्दकोश पुस्तक का विवरण". मूल से 25 अप्रैल 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 2016.
2. ↑ "Look East: A new son rises" [पूरब की ओर देखो: एक नए सूरज का उदय हुआ है] (अंग्रेज़ी में). दि हिन्दू. मूल से 16 जनवरी 2004 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 21016. ।
3. ↑ हाइकू इन इंडिया Archived 2016-04-25 at the वेबैक मशीन(अँग्रेजी में)
4. ↑ "Dr. Satya Bhushan Verma,World Haiku Association [[हिन्दी]]: डॉ॰ सत्यभूषण वर्मा, वर्ल्ड हाइकू एसोसियेशन". मूल से 17 सितंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जून 2013.
5. ↑ "She has earned laurels for writing poems in Haiku style" [वे हाइकू शैली में कविताएं लिखने के लिए ख्याति अर्जित की है] (अंग्रेज़ी में). टाइम्स ऑफ इंडिया. मूल से 29 जून 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 2016. ।
6. ↑ "जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता पुस्तक की जानकारी". मूल से 1 जुलाई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 मई 2016.
7. ↑ "प्रो. सत्यभूषण वर्मा का प्रदेय एवं हाइकु की विकास-यात्रा के सोपान". मूल से 9 मई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 2016.
8. ↑ "हिन्दी साहित्य में स्थान बनाती जापानी विधाऐं". मूल से 17 अप्रैल 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 2016.